धनुष लीला

चर्चा में क्यों?

राजस्थान के बारां ज़िले में **150 साल बाद धनुष लीला का आयोजन किया गया**, जो हाड़ौती क्षेत्र की एक प्राचीन [लोक परंपरा](#) है।

मुख्य बिंदु

धनुष लीला के बारे में:

- यह तीन दिवसीय आयोजन [रामनवमी](#) के अवसर पर किया गया और इसमें **भगवान राम द्वारा शिव धनुष भंग की लीला** को मंचित किया गया।
- कार्यक्रम की शुरुआत **गणगौर की तीज** से होती है, जिसमें **गणपति स्थापना**, **आयोजन समिति का गठन** और **व्यवस्थाओं का वितरण** किया जाता है।
- आयोजन से पूर्व **जुलूस** निकाला जाता है, जिसमें **'सर कट्या' और 'धड़ कट्या'** की सवारी प्रमुख होती है।
- **तंत्र क्रियाओं** से युक्त झाँकियों को विशेष चौक में लाया जाता है जहाँ मंचन होता है।
- सभी संवाद **लोकभाषा 'बही'** में लिखे गए होते हैं।

राजस्थान की प्रमुख लोककलाएँ

सांझी

- श्राद्ध पक्ष के 15 दिनों में कन्याएँ माता पार्वती के रूप में सांझी की पूजा करती हैं।
- अंतिम दिन महिलाएँ थम्बुड़ा व्रत करती हैं।

मांडणा

- मांगलिक अवसरों पर घर की दीवारों व आंगन में रंगों से **ज्यामितीय चित्र** बनाए जाते हैं।
- यह चित्र त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त आदि आकृतियों में होते हैं।

फड़ कला

- कपड़े पर देवी-देवताओं की गाथाओं का चित्रण किया जाता है जिसे 'फड़' कहा जाता है।
- इसका प्रमुख केंद्र **शाहपुरा (भीलवाड़ा) है**, जोशी जाति इसे बनाती है।

कठपुतली

- काष्ठ की पुतलियों को धागों से संचालित कर नाटकीय प्रस्तुति दी जाती है।
- इनका निर्माण जयपुर, उदयपुर व चित्तौड़गढ़ में होता है।

बेवाण

- लकड़ी से बना सिंहासन, जिस पर ठाकुर जी को विराजमान कर एकादशी पर तालाब ले जाया जाता है।
- इसका निर्माण **बस्सी (चित्तौड़गढ़)** में होता है।

चौपड़ा

- लकड़ी से बना मसाले रखने का पात्र, जिसमें 2, 4 या 6 खाने होते हैं।
- **पश्चिमी राजस्थान में इसे 'हटड़ी' कहते हैं**, पूजन में उपयोग होता है।

तोरण

- विवाह के समय वर द्वारा वधु के घर द्वार पर लकड़ी की कलात्मक आकृति लगाई जाती है।
- इस पर मयूर या सुवा की आकृति होती है, जिसे तलवार या हरी टहनी से स्पर्श किया जाता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/dhanush-leela